श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये

शत्रुंजय अकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

Answer sheet 2021

अभ्यासक्रम क्रं. : तृतीय वर्ष 2

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर ____ 2 शहर ____

विद्यार्थी का नाम ANSHER

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	देवताओंका
(२)	वसुदेव चरियं
(३)	मातापिता
(४)	यथाप्रवृत्तिकरण
(५)	दस पूर्व
(६)	अहारक शरीर
(७)	मिश्र
(८)	कर्म बांधने
(९)	अधिगम सम्यकत्व
(१०)	वैभारगिरि
(११)	अपूर्वकरण
(१२)	उपशम
(१३)	क्षायोपशमिक
(१४)	सुझते
(१५)	शांत
(१६)	शिखरण
(१७)	अप्रत्याख्यानी
(१८)	क्षायोपशमिक
(१९)	बाहर
(२०)	शिव

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	सिंह
(२)	वरदत्त
(३)	अंतर्मुहूर्त
(४)	अभव्य जीव
(५)	व्यंतर
(६)	पाप
(७)	आर्यमहागिरी
(८)	घोल
(९)	स्वार्थसिद्ध
(१०)	आगाल
(११)	धर्मघोष
(१२)	संवेग
(१३)	चंद्र
(१४)	मनुष्य
(१५)	कंबल

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	भाल
(२)	मरता है
(३)	अधिक
(४)	चौथे
(५)	सिंह
(६)	उत्कृष्ट
(७)	नमक / पृथ्वीकाय
(८)	लोच कर डाला
(९)	वैक्रिय
(१०)	शस्त्रों को
(११)	भयंकर
(१२)	पट्टेला
(१३)	सुभट
(१४)	लंबी
(१५)	हाथी के
(१६)	कहते है
(१७)	दुगुणा
(१८)	तीक्ष्ण
(१९)	हे मुनिपति
(२०)	जघन्य से

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	१
(२)	५	(७)	८
(३)	१०	(८)	२
(४)	७	(९)	४
(५)	९	(१०)	३

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	7
(२)	१६०
(३)	११
(४)	६६
(५)	१८
(६)	७४
(७)	२९
(८)	४५
(९)	९००८
(१०)	५२

प्रश्न-६ ✓ या × / प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

	प्रश्न-६		प्रश्न-७
(१)	×	(१)	१९
(२)	✓	(२)	3
(३)	×	(३)	९०
(४)	×	(४)	१४
(५)	✓	(५)	८
(६)	✓	(६)	२
(७)	✓	(७)	20
(८)	×	(८)	९०
(९)	✓	(९)	६
(१०)	×	(१०)	२६

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+ प्रश्न-८ मिले हुए गुण	= कुल गुण

रीमार्क ____ जांचनेवाले की सही ____

प्रश्न - ८

१. जब अनिवृत्तिकरण संख्याता भाग व्यतीत होते हैं और अंतिम संख्यातवा भाग बाकी रहता है, तब जीव अंतरकरण करता है। अंतरकरण याने मिथ्यात्व के उदय में अंतर-रुकावट खडी करना। जीस जीव को सतत मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के पुद्गल उदय में आते हैं उन्हे उपशमित करने के लिए अंतरकरण करना आवश्यक है। अंतरकरण करने के लिए मिथ्यात्व के तीन विभाग करते है। १) अंतरकरण पहले के मिथ्यात्व के दलिये और उनकी स्थिती २) अंतरकरण करते वक्त दलिये और उनकी स्थिती ३) अंतरकरण के बाद के दलिये और उनकी स्थिती। मिथ्यात्व के जो दलिये उदय में आनेवाले है उन दलियों को जीव उपर के दलियों मे अथवा नीचे के दलियों में डालता है, अतः बीच में खाली जगह निर्माण होती है।

२. तब श्री भद्रबाहुस्वामी, पांचसौ मुनीवर और श्री स्थूलभद्रजी को प्रतिदिन सात वाचना देने लगे, कुछ समय बाद स्थूलभद्रजी के सिवाय अन्य मुनि वाचना से उद्विग्न होकर चले गये, और स्थूलभद्रजी ने दो वस्तु कम ऐसे दसपूर्व का अभ्यास किया। बाद में प्राणायम ध्यान पूर्ण होने पर श्री भद्रबाहुस्वामी स्थूलभद्रमुनि सहित विचरण करते हुअे पाटलीपुत्र के उद्यान में पधारे, उधर उन्हे वंदन करने के लिए स्थूलभद्रमुनि की दीक्षित हुई सात बहन साध्वीया आयी, जिन को स्थूलभद्रमुनि के जगह सिंह दिखा, बाद में भाई मुनि का वंदन हुआ। बाद में स्थूलभद्र वाचना लेने आये तब विद्या से सिंहरुप बनानेवाले उन्हे, गुरुने कहा की तुम सुत्रपाठ के लिये अयोग्य हो। स्थूलभद्रमुनिने पश्चातापपूर्वक क्षमा मांगी, तब यह पाठ किसी को नही देने के शर्त पर, ये चार पूर्व अर्थ बिना के उन्हे दिये।

३. गर्भज, तिर्यंच और वायुकाय को चार शरीर होते हैं, मनुष्य को पाँच शरीर और शेष के तीन शरीर होते है। चार स्थावर को (वनस्पति काय को छोडकर) दोनो प्रकार से अंगुल के असंख्यात वे भाग का शरीर होता है। गर्भज तिर्यंच और वायुकाय को ४ शरीर अर्थात औदारिक, वैक्रिय, तेजस और कार्मण ऐसे आहारक को छोडकर चार शरीर होते हैं। मनुष्य को सब पाँचो शरीर होते है। शेष इक्कीस दंडक को तीन याने औदारिक अथवा वैक्रिय और तेजस एवं कार्मण शरीर होता है। देवताओं के १३ और नारकी के १ इन चौदह दंडक में वैक्रिय, तेजस और कार्मण ये तीन शरीर होते है। पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वनस्पतिकाय एवं द्विइंद्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय इन ७ को औदारिक, तेजस एवं कार्मण ये तीन शरीर होते हैं।

४. छः काय जीवों की रक्षा के लिये हर एक साधु-साध्वीजी महाराज साहेब को बहुत ही सावधानीसे रहना पडता है। गोचरी वोहरने को जाय वहां कोई भी वस्तु कच्चे पानी के साथ, फल आदि वनस्पति के साथ या कच्चे नमक के साथ स्पर्श की हुई हो, तो वो वस्तु साधु नही ले सकते, साधु के लिए वो त्याज्य बन जाती है। उसी तरह गोचरी वोहराने वाला भी इसमें से किसी वस्तु को स्पर्श किया हुआ तो उसके हाथ से आहार-पानी लेना साधु को नहीं कल्पता है।
इसी तरह सब्जी सुधारती बहन, अनाज साफ करती बहन, चुल्हे सिगडी पर काम करती बहन के हाथो से भी साधु आहार-पानी नही ले सकते।

५. प्रज्वलित अग्नि जैसे नेत्रवाले जिसने अत्यंत मुख फाडा है, ऐसे महाकाय और जिसने नखरुपी वज्र के घात से गजेन्द्र के कुंभस्थल के विस्तार को विदारा है, ऐसा क्रोधित सिंह होता है। जो मुनिवर के उत्तम चरण युगल के अच्छी तरह आश्रित हुए हैं, वे चंद्र जैसे सफेद दंतशूल वाले, लंबी सूंढ को उछालने से जिनका उत्साह वृद्धि पाया है, शहद जैसे पीले दो नेत्रवाले, ~~जैसे~~ जल से भरे नये मेघ जैसे शब्दो वाले भयंकर बडे गजेंद्र भी अति नजदीक आया हो तो भी वो उसे गिनता नही है।